

समाहरणालय, सहरसा

(जिला कला एवं संस्कृति कार्यालय)

Email Id- dacosaharsa@gmail.com

पत्रांक- 376/जि०क०सा०का० दिनांक- 16.09.25

यूनेस्को की मानवतावादी सांस्कृतिक विरासत (ICH) की प्रतिनिधि सूची में शामिल करने के लिए छठ पर्व का नामांकन

सहमति पत्र

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा में छठ पर्व एक अद्वितीय और प्राचीन उत्सव है। सूर्योपासना को समर्पित यह पर्व मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में बड़े श्रद्धा, भक्ति और अनुशासन के साथ मनाया जाता है। इसकी महत्ता धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और सामाजिक चारों स्तरों पर स्पष्ट दिखाई देती है।

धार्मिक दृष्टि से छठ पर्व का आधार वैदिक परंपरा से जुड़ा हुआ है। इस अवसर पर भक्तजन अस्ताचलगामी और उदयाचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं। सूर्य को प्रत्यक्ष देवता माना गया है, क्योंकि वे जीवन, ऊर्जा और स्वास्थ्य के स्रोत हैं। साथ ही, सूर्य की बहन मानी जाने वाली छठी मैया या उषा का पूजन कर लोग संतान, सुख-समृद्धि और आरोग्य का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस पर्व का सबसे महत्वपूर्ण अंग है 36 घंटे तक का निर्जला उपवास, जो आत्मशुद्धि, धैर्य और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है।

सांस्कृतिक रूप से छठ समाज में एकता और सद्भाव का अदभुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। जाति, वर्ग, लिंग और धर्म से परे सभी लोग नदी, तालाब और घाटों पर एक साथ पूजा-अर्चना करते हैं। पारंपरिक लोकगीत और व्रत-गीत वातावरण को भक्तिमय बनाते हैं। घर-आँगन की सफाई, मिट्टी के चूल्हे पर प्रसाद जैसे ठेकुआ और अन्य प्राकृतिक सामग्रियों से बना भोग ग्रामीण संस्कृति और स्वदेशी जीवनशैली को जीवंत बनाए रखते हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी छठ का महत्व कम नहीं है। पर्व से पहले जलाशयों और घाटों की सामूहिक सफाई पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है। सूर्य की किरणों से मिलने वाला प्राकृतिक विटामिन-डी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

सामाजिक दृष्टि से छठ पर्व आत्मनियंत्रण, सादगी और सेवा की भावना को सशक्त करता है। परिवार और समाज के लोग एक-दूसरे की सहायता में आगे रहते हैं, जिससे आपसी भाईचारा और सहयोग बढ़ता है।

संक्षेप में, छठ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि प्रकृति, सूर्य और जल के प्रति आभार व्यक्त करने का महापर्व है। यह हमें आत्मसंयम, स्वच्छता, पर्यावरण-संरक्षण और सामूहिकता का अमूल्य संदेश देता है, जो मानव जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने में सहायक है। ऐसे अद्वितीय पर्व को विश्व की सांस्कृतिक विरासत में अवश्य ही शामिल किया जाना चाहिए।

विश्वासभाजन

Shikha Kumari

Collectorate, Saharsa
(District Arts and Culture Office)
Email Id- dacosaharsa@gmail.com
Letter No. 376/ Dated - 16.09.25

Nomination of Chhath Festival for Inclusion in UNESCO's Representative List of Humanitarian
Cultural Heritage (ICH)

Consent Letter

Chhath Festival is a unique and ancient festival within India's rich cultural tradition. This festival, dedicated to Sun worship, is celebrated with great reverence, devotion, and discipline, primarily in Bihar, Jharkhand, eastern Uttar Pradesh, and the Terai regions of Nepal. Its significance is evident at all four levels: religious, cultural, environmental, and social.

Religiously, the Chhath Festival is rooted in Vedic tradition. On this occasion, devotees offer prayers to the setting and rising Sun. The Sun is considered a visible deity, as it is the source of life, energy, and health. Additionally, by worshipping Chhathi Maiya or Usha, considered the sister of the Sun, people seek blessings for children, happiness, prosperity, and health. The most important aspect of this festival is the 36-hour waterless fast, which provides self-purification, patience, and spiritual strength.

Culturally, Chhath presents a wonderful example of unity and harmony in society. Irrespective of caste, class, gender and religion, people worship together at rivers, ponds, and ghats. Traditional folk songs and fasting songs create a devotional atmosphere. Cleaning the courtyard and preparing prasad like thekua on a clay stove and offerings made from other natural ingredients keep rural culture and the indigenous lifestyle alive.

Chhath is also important from an environmental perspective. The collective cleaning of water bodies and ghats before the festival conveys the message of environmental protection. The natural vitamin D obtained from sunlight is beneficial for health.

From a social perspective, Chhath festival strengthens self-control, simplicity, and the spirit of service. Family and community members come forward to help each other, fostering mutual brotherhood and cooperation.

In short, Chhath is not just a religious ritual but a grand festival to express gratitude to

nature, the Sun, and water. It imparts invaluable messages of self-control, cleanliness, environmental protection, and collectivism, which contribute to a balanced and meaningful human life. Such a unique festival must be included in the world's cultural heritage.

Vishwasbhajan

District Art and Culture Officer, Saharsa

16/09/25

Collectorate, Begusarai

District Arts and Culture Office

Email: dacobegusarai@gmail.com

Address: Pratham Tal, Kargil Vijay Sabha Bhawan, Collectorate, Begusarai

Sender: Shyam Kumar Sahni
District Arts and Culture Officer
Begusarai

To:

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India

Subject: Consent to Nominate Chhath Mahaparva for UNESCO Representative List

Sir,

It is respectfully stated that the Department of Arts, Culture and Youth, Begusarai, which is engaged in the preservation and promotion of intangible cultural heritage in Begusarai district, including Bihar, extends its consent and support for the nomination of this great festival of our folk faith. As is well known, Chhath festival, a unique festival of Sun worship, is celebrated in many countries around the world, including Bihar, Jharkhand, West Bengal, eastern Uttar Pradesh, and the Terai regions of Nepal.

The Mahaparva has been celebrated in various regions for generations. Chhath has been a bond that binds communities together; its rituals foster nature worship, environmental balance, inclusiveness, and community unity. Our department has played an active role in documenting and promoting community activities related to the Chhath festival and will continue to contribute to its preservation and promotion.

We confirm that this nomination represents the collective consensus of all artists and cultural workers associated with the department.

Yours faithfully

District Arts and Culture Officer
Begusarai

(1)



समाहरणालय बेगूसराय
(जिला कला एवं संस्कृति कार्यालय, बेगूसराय)



Email: dacobegusarai@gmail.com, पता - प्रथम तल, कार्यालय विजय स्था भवन, समाहरणालय बेगूसराय

पत्रांक :- 263/

प्रेषक
श्याम कुमार सहनी
जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी
बेगूसराय।

सेवा में,
नोडल प्राधिकरण
अमूर्त सांस्कृतिक विरासत
संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार।

दिनांक...13./09/25

विषय - छठ महापर्व को यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में नामांकित करने हेतु सहमति।

महोदय,

सविनय कहना है कि कला संस्कृति एवं युवा विभाग कार्यालय बेगूसराय जो कि बिहार सहित बेगूसराय जिले में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और संवेधन हेतु कार्यरत है। हमारी लोक आस्था का महापर्व के नामांकन हेतु अपनी सहमति और समर्थन प्रदान करते हैं।

जैसा कि सर्वविदित है कि छठ पर्व सूर्योपासना का अनुपम महापर्व जिसे बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों सहित विश्व के कई देशों में मनाया जाता है।

महापर्व पीढ़ियों से विभिन्न क्षेत्रों में जन समुदायों को एक सूत्र में पिरोता रहा है। इसके अनुष्ठान में प्रकृति-पूजन पर्यावरणीय संतुलन, समावेशिता और सामुदायिक एकता का बोध होता है। हमारे विभाग ने छठ महापर्व से संबंधित गतिविधियों के प्रलेखन प्रोत्साहन और सामुदायिक सहयोग में सक्रिय भूमिका निभाई है तथा आगे भी इसके संरक्षण एवं संवेधन में योगदान देती रहेगी।

हम पुष्टि करते हैं कि यह नामांकन विभाग से जुड़े सभी कलाकारों संस्कृति कर्मियों की सामूहिक सहमति का प्रतिनिधित्व करता है।

fc1~~ - Uc '-18144
cm- ~'itçl 0~fa~~-
~ "if 11'-iiRPa ~
-gg t18iifa l
' 'i5l G~,
t1fc11~
ç511 ~
fcl>
çcril
fi~fa ~
~ ~

ø1~~crt~ ~**J1ft'**<|~ "GIT fcl> ~51'< tiffia ~'lft-<|~ fG@" "if ~ tii~Rlct> ~xl8x cf> ~ 3iR ffltFf
-gg ct>l4xa 51 5'il~ ~ 3lIBITT clTT "'15144 cf> 11"'iicf>1 -gg ~44) {i5'ifa afR Wl~ ~Gl1
ffl ~|

~ fcl> ti4fc1~a **5** fcl> Uc "CfcT '{i4141fl11 cpl" 3ij4'-i '-15144 ~ ~51'<, \$llx~u'5, 4~il'-i
61.JlIC'i, ~ '3f1'< ~ **afR** ~4lci cf> ~ ~ tif5a fc1~q cf> ~ ~ 1f '-111~1 "11c11 51

"'16144 q)ft}~'i ~ ~ ~ +l ~ fl!1Gl4i cpl" ~ **W** +l fl!~lc11 WT 51 ~ **3ijtdl1 +l**
~ctgfa~**Gi1** 4~~q-~<o~~ xigci1, ti'il~~lc11 **3fR** fl!1Gl~cf> ~cf>c11 cnT ~

ffiTT 51 ~ ~ ~ Uc "'16144 ~ ~ ~ cf> ~8l~1 ~lctil51 3tR
xil!1Gl~cf> fi84Pl 1f xifm~ '1~ø1 ~ **5** elm ~ ~ ~ ~ ~ ffl1cA 1f ~| **41Gl1** ~~|

6lf ~ **ffl** ~ fcl> <16 11"'iiø1 ~ ~ ~ ~ øcrtlø1x1· ftt<|Jfa cpfB~'i ~ fl..... l~-f6---cp

fl5'iRI clTT ~ ø'<di 51

PARIKSHIT MAHATO CHHAU ACADEMY

VILL-KHERABERA, PO-BARMASIA, PS-CHANDANKIYARI, DT-BOKARO, JHARKHAND

CER_3-1.2023 2024/5860

Mobile No- 8969272435, 8969916650

E-Mail :- rakeshmahato15031994@gmail.com



Ref. No. PMCA002

Date:- 15/

छठ पूजा जीवत परंपरा

छठ पूजा भारत की सबसे प्राचीन और जीवत परंपराओं में से एक है। यह मुख्य रूप से बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में बड़े उत्साह के साथ मनाई जाती है।

छठ पूजा की जीवत परंपरा बनाने वाले प्रमुख पहलू:-

- ① प्रकृति और पर्यावरण से सिखा सम्बन्ध
- ② सामुदायिक एकता की भावना का विकास
- ③ शांति, सादगी एवं लोकप्रिय पर्व
- ④ लोकगीत और सांस्कृतिक धरोहर को एक पिढ़ी से दूसरी पिढ़ी तक हस्तांतरित करना।
- ⑤ महिलाओं की केंद्रीय भूमिका

PARIKSHIT MAHATO CHHAU ACADEMY

VILL-KHERABERA, PO-BARMASIA, PS-CHANDANKIYARI, DT-BOKARO, JHARKHAND

CER_3-1.2023 2024/5860

Mobile No- 8969272435, 8969916650

E-Mail :- rakeshmahato15031994@gmail.com



Ref. No. PMCA001

Date:- 15/06/2023

प्राचीन काल से ही लोग प्रकृति पूजक थे, और लोग प्रकृति में रहकर सूर्य देव का दर्शन किया। छठ पर्व सूर्य देव और छठी मैया (उषा) देवी का समर्पित है।

यह पर्व सूर्य देव की उपासना और उनके जीवनदायी प्रकाश एवं ऊर्जा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मनाया जाता है।

यह पर्व कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की छठी तिथि को मनाया जाता है। चैत मास में भी छठ का पर्व आता है जिसे चैती छठ कहा जाता है।

छठ पर्व का महत्व —

- इस पर्यावरण और प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने वाला पर्व माना जाता है।
- इसमें सूर्य की उपासना के साथ जल वायु और धरती के तत्वों का सम्मान किया जाता है।
- छठ पर्व सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का प्रतिक है।
- इस पर्व में भेदभाव नहीं होता, हर जाती और वर्ग के लोग मिलकर पूजा करते हैं।

यदि किसी व्यक्ति में ऊर्जा शक्ति और स्वास्थ्य

Parikshit Mahato Chhau Academy

Vill Kherabera, PO Barmasia, PS-Chandankiyari, DT- Bokaro, Jharkhand

CER_3-1-2023 2024/5860

Mobile No. 8969272435, 8969916650

Email: rakeshmahato15031994@gmail.com

Ref. No. PMCA001 Date 15/09/2025 **Chhath Puja - a living tradition**

Chhath Puja is one of India's oldest and most vibrant traditions. It is celebrated with great enthusiasm primarily in Bihar, Jharkhand, Uttar Pradesh, and the Terai regions of Nepal.

Key aspects that make Chhath Puja a vibrant tradition include:

- (1) direct connection to nature and the environment
- (2) development of a sense of community unity
- (3) a popular festival of peace and simplicity
- (4) transfer of folk songs and cultural heritage from one generation to another
- (5) main role of women

Since ancient times, people have been nature worshippers and have visited the Sun God by staying in nature. Chhath festival is dedicated to the Sun God and the Goddess Chhathi Maiya (Usha).

This festival is celebrated to worship the Sun God and express gratitude for his life-giving light and energy.

This festival is celebrated on the Shashthi tithi of the Shukla Paksha of the month of Kartika. The Chhath festival also falls in the month of Chaitra. It is called Chaiti Chhath.

The Significance of Chhath Festival

- This festival is considered to express gratitude towards the environment and nature.
- In this festival, along with the worship of the sun, water, air, and the

elements of the earth are honored.

- Chhath Festival symbolizes social harmony and family unity.
- There is no ambiguity in this festival; people of all castes and classes worship together
- Worshiping the Sun provides energy, strength, and health to the body. .

LL

CCRT/JF-3/268/2021

6.12



RAVI VERMA

ACTOR, DIRECTOR

DRAMATICS (HON) LNMU DARBHANGA

MPSD, BHAOPAL (MP) 2013-14

पाकं - दनाकं - 13/09/2025 सवे ा म,

नोडल ाधकरण,

अमतूसां कृतक वरासत,

सं कृत मं ालय

भारत सरकार।

वषय: छठ महापवको यन्त्रको तनध सचू ि मनामांकित करनेहते ुसहमत

महोदय/महोदया,

हम, लोबल आट, बरौनी, बगे सू राय, जो बहार मअमतूसां कृतक धरोहर केसरं ण और सवं धन हते ुकायरत ह, छठमहापवके नामाकं नहतेअपनी सहमत और समथन दान करतेह।

पीढ़य सेछठ बहार, उर देश, झारखंडं तथा अय े मसमदाय को एक सू मपरोता रहा ह। ै इसकेअनुान कृत-पजून, पयाव रणीयसतं लु न, समावेशता और सामदायक एकता के तीक ह। हमारी सं ा नेछठ पवसेसबं ंधत गतवधय के लखे न, ोसाहनऔरसामदायक सहयोग मसय भूमका नभाई हैतथा आगेभी इसकेसरं ण मयोगदान देती रहगे ि।

हम पु करतेहक यह नामाकं न साधक, समदाय और सं ा क सामूहक सहमत का तनधव करता ह। ै

भवदय,

रववमा

मयदेशनावालय

9534445159

raviagrca@gmail.com

Date: 13/09/2025

To:

Nodal Authority,

Intangible Cultural Heritage,

Ministry of Culture, Government of India

Subject: Nomination of Chhath Mahaparva for UNESCO's Intangible Cultural Heritage List

Dear Sir/Madam,

We, Lok Kalyan, Barauni, Begusarai, working for the preservation and protection of intangible cultural heritage in Bihar, express our consent and support for the nomination of Chhath Mahaparva.

For generations, Chhath Puja has been celebrated with great zeal in Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand, and other regions, bringing communities together. It embodies the principles of nature worship, sustainable balance, inclusivity, and communal harmony.

Our organization has actively participated in documenting the rituals, folk songs, and community involvement associated with Chhath Puja and will continue to contribute to its preservation. We hope this nomination reflects the collective consent and representation of the community and society.

Sincerely,

Ravi Verma
Desna Village
9534445159
raviagrca@gmail.com
Mob No.

Buo4n aba

O O7766044089

o o9162134770

Email id

Shri Shri 1008 Chhath Pooja Samiti

Lakshinarayan, Kali Mandir

Collectorate Ghat, Patna - 800 001

Mob No..... Email id.....

To

Nodal Authority,
Amoorat Sanskritik Virasat
Ministry of Culture,
Government of India

Subject: Consent to the Nomination of Chhath Mahaparva as a Representative
Intangible Cultural Heritage of Humanity

Sir,

We, the signatories, Presidents (Shri Shri 1008 Chhath Puja Committee), Laxminarayan Kali Temple, Collectorate Ghat, Patna, who are the bearers of the rituals, traditions, and preservation of Chhath Mahaparva, hereby give our full and wholeheartedly consent to the nomination of Chhath Mahaparva on UNESCO's List of Representative Intangible Cultural Heritage of Humanity.

There is no place for social discrimination in Chhath Mahaparva, rich, poor, young and old, men and women all stand together on one ghat and worship Lord Bhaskar (Sun).

Therefore, we give our full consent to the nomination.

President Secretary

Varfani Baba Rohit Kumar Vicky Mob. No. - 7766044089 Mob. No. 9162134770



KILKARI
BIHAR BAL BHAWAN
Established by Department of Education
Government of Bihar
(An ISO 9001 : 2015 Certified Organization)

Letter No.:BBBK/149/315
Date : 14/09/2025

सेवा में,

सचिव,
संगीत नाटक अकादमी,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार,
35, फिरोज शाह रोड, रवींद्र भवन,
नई दिल्ली-110001

विषय : छठ महापर्व को यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में नामांकित करने हेतु सहमति।

महोदय/महोदया,

हम, किलकारी बिहार बाल भवन, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार की एक स्वायत्त संस्था, 8 से 16 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु रचनात्मक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन हेतु विगत 16 वर्षों से कार्यरत हैं। किलकारी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समरसता तथा भारतीय लोक परंपराओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना है।

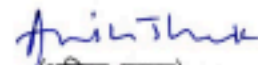
इस दिशा में भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन को लेकर हमारी संस्था प्रतिबद्ध रही है। इसी क्रम में हम छठ महापर्व के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नामांकन के प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन करते हैं तथा अपनी संस्था की ओर से सहमति प्रदान करते हैं।

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय उदाहरण है, जो प्रकृति-पूजन, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकजुटता, सामुदायिक सहभागिता और पर्यावरणीय चेतना जैसे मूल्यों को सुदृढ़ करता है। यह पर्व विशेष रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड सहित भारत के विभिन्न हिस्सों और प्रवासी भारतीय समुदायों में भी पीढ़ी दर पीढ़ी आस्था, श्रद्धा और परंपरा के साथ मनाया जाता रहा है।

किलकारी द्वारा समय-समय पर छठ महापर्व से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन, जैसे लोकगीत गायन, पारंपरिक कला कार्यशालाएँ, बच्चों के बीच छठ परंपरा की जानकारी हेतु कार्यक्रम, दृश्य-श्रव्य प्रलेखन तथा स्थानीय समुदायों के साथ संवाद-निरंतर रूप से किया गया है। ये प्रयास न केवल बच्चों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि लोकपरंपरा की निरंतरता को भी सुनिश्चित करते हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पवित्र और सार्वभौमिक सांस्कृतिक परंपरा, छठ महापर्व को यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में नामांकित करने हेतु किलकारी सहमति प्रदान करती है।

भवदीय,


(अनिता ठाकुर)
कार्यक्रम पदाधिकारी



Kilkari , Bihar Bal Bhawan

To
Secretary
Sangeet Natak Akademi
Ministry of Culture, Government of India
35 Ferozeshah Road, Rabindra Bhawan
New Delhi – 110001

Sub: Inclusion of the Chhath Mahaparv in the Representative List of the Intangible Cultural Heritage

Sir/Ma'am,

We, Kilkari Bal Bhawan are an autonomous body functioning under the aegis of Education Ministry of the Bihar Government.

Our organisation has been working for the last 16 years to conduct creative, educational and cultural activities for the holistic development of the children in the age group of 8 to 16. The main objective of Kilkari is to develop creativity, cultural consciousness, social harmony and sensitivity towards Indian folk traditions in children.

In this direction, our institution has been committed to the preservation and promotion of Indian intangible cultural heritage. Accordingly, we fully support the proposal for nomination of Chhath Mahaparva as Intangible Cultural Heritage and give consent on behalf of our institution.

Chhath Puja is a unique example of Indian culture that reinforces values such as nature worship, social harmony, family togetherness, community participation and environmental consciousness. This festival has been celebrated with faith, reverence and tradition for generations, especially in different parts of India including Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand and also among the Indian Diaspora communities.

Activities related to Chhath Mahaparv have been organized by Kilkari from time to time, such as folk songs, traditional art workshops, programs for the knowledge of Chhath tradition among children, audio-visual documentation and interaction with the local community. These efforts not only connect the children with their cultural roots but also ensure continuity of folk traditions. We at Kilkari give our consent for the inclusion of this sacred and universal cultural tradition to be enlisted in the Representative List of The Intangible Cultural Heritage of UNESCO.

Yours Sincerely
Anita Thakur

KISHORI DAI SHODH PEETH

Registration No.1371/04/210/2018 Delhi | PAN No. AADTK6339H



Ref. No.....

PATRON

SH. PREM SHANKAR JHA
INDIAN ECONOMIST,

JOURNALIST AND WRITER

SH. PANKAJ KR MISHRA
PROFESSOR (D.U)

SH. B.D MISHRA
RETIRED OFFICER(M.F.)

SH. SUSHIL KR MISHRA
PRINCIPAL (IP UNIVERSITY)

SH. KANHAIYA CHOUDHRY
RETIRED OFFICER (ICAR)

सेवा में,
नोडल प्राधिकरण,
नोडल अथॉरिटी, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

विषय: छठ महापर्व को यूनेस्को की मानवता की प्रतिनिधि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नामांकन हेतु सहमति।

महोदय/महोदया,

यह पत्र भारतीय संस्कृति के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अद्वितीय पर्व छठ महापर्व को यूनेस्को की मानवता की प्रतिनिधि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल करने के लिए भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित नामांकन के लिए हमारी पूर्ण सहमति और समर्थन व्यक्त करने लिखा जा रहा है।

छठ पर्व, जो कि सूर्य देव और छठी मैया की उपासना का महापर्व है, केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, जल और सूर्य के प्रति कृतज्ञता और सम्मान का एक अनुपम उदाहरण भी है। यह पर्व मुख्य रूप से भारत के बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्र में मनाया जाता है, लेकिन अब इसकी मान्यता और लोकप्रियता वैश्विक स्तर पर फैल चुकी है।

इस पर्व की सबसे बड़ी विशेषता इसका सामूहिक और समावेशी स्वरूप है। इसमें किनारे की जाति, धर्म या सामाजिक भेद-भाव के बिना सभी लोग एक साथ मिलकर पूजा-अर्चना करते हैं। यह निम्नलिखित कारणों से मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नामांकन के लिए पूर्णतः योग्य है:

- प्रकृति के साथ जुड़ाव: यह पर्व प्रकृति के तत्वों - सूर्य और जल - की उपासना पर केंद्रित पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान का संदेश देता है।
- वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व: पर्व में उपयोग किए जाने वाले अनुष्ठान और सामग्री, जैसे बांस की टोकरी (सूप) और ठेकुआ, अपने पारंपरिक ज्ञान और औषधीय गुणों के लिए जाने जाते हैं।
- सामुदायिक एकजुटता: छठ एक ऐसा पर्व है जो परिवारों, समुदायों और समाज को एक साथ जोड़ता है, आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।
- महिला सशक्तिकरण: इस पर्व में महिलाएं मुख्य भूमिका निभाती हैं, जो उनके त्याग, तपस्वीता और समर्पण का प्रतीक हैं।
- मौखिक परंपरा और लोकगीत: छठ से जुड़े लोकगीत, लोककथाएं और अनुष्ठान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होते रहे हैं, जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

हमारा मानना है कि छठ महापर्व की ये विशेषताएं इसे यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल करने के लिए एक आदर्श उम्मीदवार बनाती हैं। यह पर्व न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह वैश्विक समुदाय को प्रकृति, सामुदायिक सद्भाव, पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण संदेश भी देता है।

हम इस नामांकन का पुरजोर समर्थन करते हैं और आशा करते हैं कि यूनेस्को इस पर्व को उसकी योग्यता के अनुसार वैश्विक पहचान देगा।

For KISHORI DAI SHODH PEETH

भवदीय,

गंगा नारायण झा

महासचिव

किशोरी दाई शोध पीठ

संपर्क-9868080062

MANAGING TRUSTEE



यह पवः भारतीय संस्कृति के एक अंतर्गत महत्पूर्ण और अति पवित्र छठ महापवः को देव की मानवता की प्रतिनिधि अमृतसांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रविवेचित नामांकन के लिए हमारी पूर्ण सहमति और समर्थन देने करने हेतु लिखा जा रहा है।

छठ पवः जो की सूर्यादेव और छटी मैत्रा की उपासना का महापवः है, केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह प्रकृति जल और सूर्य के प्रति कृतज्ञता और सन्तान का एक अनुपम उदाहरण भी है। यह पवः मुद्रा रूप से भारत के बिहार, झारखण्ड, पूर्व उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है, लेकिन अब इसकी माता और लोकप्रियता वैश्व स्तर पर फैल चुकी है।

इस पवः की सबसे बड़ी विशेषता इसका सामूहिक और समावेशी स्वरूप है। इसमें किसी भी जाति, धर्म या सामाजिक भेद भाव बिना सभी लोग एक साथ मिलकर पूजा अर्चना करते हैं। यह पवित्र लिखित कारणों से मानवता की अमृतसांस्कृतिक धरोहर के रूप में नामांकन के लिए पूर्णतः योग्य है:

प्रकृति के साथ जुड़ाव : यह पवः प्रकृति के तत्वों - सूर्य और जल की उपासना के द्वारा विद्रित है, जो प्यास वरुण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सन्तान का संरक्षण देता है।

वैश्विनिक और आध्यात्मिक महत्त्व : पवः में उपयोग किये जाने वाले अनुष्ठान और सामग्री, जैसे की बांस की टोकरी (सूप) और ठेकुआ, अपने पारंपरिक स्वरूप और औषधीय गुणों के लिए जाने जाते हैं।

सामुदायिक एकजुटता : छठ एक ऐसा पवः है जो परिवारों, समुदायों और समाज को एक साथ लाता है, आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

महिला संश्लेषण : इस पवः में महिलाएं मुद्रा भूमिका निभाती हैं, जो उनके श्रम, तपस्वा और समर्पण का प्रतीक हैं।

मौखिक परंपरा और लोकगीत : छठ से जुड़े लोकगीत, लोकगाथाएं और अनुष्ठान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित हो रहे हैं जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

हमारा मानना है कि छठ महापवः की यह विशेषताएं इसे देव की अमृतसांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल करने के लिए एक आदर्श उदाहरण बनती हैं। यह पवः केवल भारतीय विविधता का प्रतिनिधि करता है, बल्कि यह वैश्व समुदाय को प्रकृति, सामुदायिक संवाद और पारंपरिक स्वरूप के संरक्षण का एक महत्पूर्ण संरक्षण भी देता है।

हम इस नामांकन पर पूर्ण समर्थन करते हैं और आशा करते हैं कि देव इस महान परंपरा को उसकी योग्यता के अनुसार वैश्व स्तर पर पहचान देगा।

सेवा में,

सचिव,
संगीत नाटक अकादमी,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार,
35, फिरोज शाह रोड, रवींद्र भवन,
नई दिल्ली-110001

विषय- छठ महापर्व को यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में नामांकित करने हेतु सहमति।

महोदय/महोदया,

किलकारी बिहार बाल भवन, छपरा, सारण शिक्षा विभाग, बिहार सरकार की एक स्वायत्त संस्था, 8 से 16 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु रचनात्मक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन हेतु विगत 03 वर्षों से कार्यरत हैं। किलकारी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समरसता तथा भारतीय लोक परंपराओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना है।

इस दिशा में भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन को लेकर हमारी संस्था प्रतिबद्ध रही है। इसी क्रम में हम छठ महापर्व के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नामांकन के प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन करते हैं तथा अपनी संस्था की ओर से सहगति प्रदान करते हैं।

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति का एक अविभाज्य अंग है जो प्रकृति-भक्ति, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकजुटता, सामुदायिक सहभागिता और पर्यावरणीय चेतना जैसे मूल्यों को सुदृढ़ करता है। यह पर्व विशेष रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड सहित भारत के विभिन्न हिस्सों और प्रवासी भारतीय समुदायों में भी पीढ़ी दर पीढ़ी आस्था, श्रद्धा और परंपरा के साथ मनाया जाता रहा है।

किलकारी द्वारा समय-समय पर छठ महापर्व से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन, जैसे लोकगीत गायन, पारंपरिक कला कार्यशालाएँ, बच्चों के बीच छठ परंपरा की जानकारी हेतु कार्यक्रम, दृश्य-श्रव्य प्रलेखन तथा स्थानीय समुदायों के साथ संवाद-निरंतर रूप से किया गया है। ये प्रयास न केवल बच्चों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि लोकपरंपरा की निरंतरता को भी सुनिश्चित करते हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पवित्र और सार्वभौमिक सांस्कृतिक परंपरा, छठ महापर्व को यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में नामांकित करने हेतु किलकारी बिहार बाल भवन, छपरा, सारण सहमति प्रदान करती है।

भवदीय,

Meera
26/09/25
(मीरा कुमारी)

प्रमण्डल कार्यक्रम समन्वयक
छपरा, सारण प्रमण्डल
बिहार

To
Secretary
Sangeet Natak Akademi
Ministry of Culture
Government of India
35 Ferozeshah Road, Rabindra Bhawan
New Delhi – 110001

Subject: For the inclusion of Chhath Mahaparv in the UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage

Kilkari Bihar Bal Bhawan, Chhapra Saran is an autonomous institution of Education Department, Bihar, functioning for the last 3 years for conducting creative, educational and cultural activities for the all round development of children in the age group of 8 to 16 years. The main objective of Kilkari is to develop creativity, cultural consciousness, social harmony and sensitivity towards Indian folk traditions in children.

In this direction, our institution has been committed to the preservation and promotion of Indian Intangible Cultural Heritage. Accordingly, we fully support the proposal for nomination of Chhath Mahaparva as Intangible Cultural Heritage and concur with our institution.

Chhath Puja is a unique example of Indian culture that reinforces values such as nature worship. It reinforces values such as social harmony, family solidarity, collective participation and environmental consciousness. The festival is mainly celebrated in Bihar, Jharkhand, Uttar Pradesh and other parts of the country. This festival has been celebrated with faith, reverence and tradition for generations also amongst the Indian Diaspora communities.

Activities related to Chhath Mahaparva have been organized by Kilkari from time to time, such as folk songs, traditional art workshops, programmes to spread awareness about Chhath tradition among children, audio-visual documentation and interaction with local communities. This effort not only connects the children with their cultural heritage but also ensures continuity of folk tradition.

We Kilkari Bihar Bal Bhawan, Chhapra Saran agree to lend our full support to nominate this sacred and universal cultural tradition, Chhath Mahaparva in the UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage.

Your sincerely
Meera Kumari

eg. No : 2337/2008-09 (Govt of Bihar)

SABERA

KALA

KENDRA

Date :
Date :

1265sQE20221

ASo265Q

AAEAS

AAI

No :

026sQF20231 AAEA

Ref. No.

An Educational
Cultural and
Social
Organization

Date

Patna4

800004

Osaberalakendrapatna@gmail.com

Head Office : Bhikhna Pahari, Patna -

Cor. Office: Vikash Colony, Sandalpur, Kumhrar, Patna- 800007 a 9931445078

To

Nodal Authority

Ministry Of Culture

Government of India

Subject: Acquiescence to nominate Chhath Mahaparva in UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage.

We, Sabera Kala Kendra, which has been working for the preservation and promotion of Intangible Cultural Heritage in folk dance, give our consent for the inclusion of Chhath Mahaparv in the representative List of Intangible Heritage of UNESCO. For generations, Chhath has been uniting communities in Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand and other regions. It is a symbol of ritual nature-worship, ecological balance, inclusiveness and community unity. Our organization has played an active role in the documentation, promotion and inducing community activities related to the Chhath festival and will continue to contribute to its preservation even in the future.

We affirm that this nomination represents the collective consensus of seekers, communities and institutions.

Yours Sincerely

Secretary

॥ श्री सूर्याय नमः ॥

श्री सूर्य क्षेत्र पंडा कमि

बड़गाँव धाम (नालन्दा)

पत्रांक.

सेवा में

नोडल अवधारिणी, अमूर्त एवं
स्वरूपी मंत्रालय, भारत
विषय - दृढ महापर्व को मानवता की प्रतिनिधि
धरोहर के रूप में नामांकन हेतु सहमत
महोदय,

हम दृष्टांतरुत सहस्र श्री सूर्य में
जो दृढ महापर्व के अनुष्ठानों परंपराओं के
वाहक हैं, इस पत्र के माध्यम से पुनः
प्रतिनिधि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर सूची में
नामांकन हेतु अपनी पूर्ण एवं निस्वार्थ सह
करते हैं;

दृढ महापर्व सांस्कृतिक सहस्रगिता
परंपराओं के कलांतरण, प्रकृति के प्रति आ
लौकिक समानता की भावना से परिपूर्ण
सांस्कृतिक ज्ञान, मौखिक परंपराएँ, लोकगीत
सूर्य तथा दृढी के मा की आखना से जुड़े
हैं।

To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent to Nominate Chhath Mahaparva as a Representative Intangible
Cultural Heritage

Sir,

We, the signatory members of Shri Surya Mandir Badgaon Dham, the bearer of the rituals, traditions, and preservation of Chhath Mahaparva, hereby express our full and unhesitating consent to the nomination of Chhath Mahaparva to UNESCO's List of Representative Intangible Cultural Heritage of Humanity.

Chhath Mahaparva is imbued with community participation, the transmission of traditions from generation to generation, respect for nature, and a spirit of gender equality. It encompasses collective knowledge, oral traditions, folk songs, rituals, and practices related to the worship of the Sun and Chhathi Maiya.

Our community has been actively involved in promoting and preserving this festival for generations and is committed to passing it on to future generations. Its international recognition will further strengthen our conservation efforts.

Therefore, we give our full consent to its nomination and also assure that we will continue to play an active role in its conservation and promotion in the future.

Shri Surya Kshetra Panda Committee
Bargaon Village



AUNGARI DHAM TRUST

Reg. No. : 5554/16

औंगारी धाम (नालन्दा)-801301

Mob.: 9431645973, 8298769006



पत्रांक 017 सेवा में

दिनांक 15/09

मोडल आर्च री, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत,
सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार

विषय :- स्वयंसेवकों की मानवता की प्रतिनिधि अमूर्त सांस्कृतिक धर्म
धर्म में नामांकन हेतु सहमति

महाशय/महोदय

आपका पुत्र अंगारी धाम में कतिपय दिनों से स्वयंसेवक
जाता है। पूरे भारत में 12 पीठ की स्थापना का वातावरण श्री कृष्ण के पैरों
धोने की जिलमें अंगारी धाम भी एक है। यहाँ धाम में दो बार
एवं नैवेद्य स्वयंसेवकों के अलावे सामाजिक स्तर पर विवाहीक मैला भी लगा
यहाँ के सरोवर एवं मंदिर में पूजा, अर्चना दान, रत्नान व आभूषण करने
मनोवैज्ञानिक काम की प्राप्ति होती है। स्वयंसेवकों के अवसर देखाते में
दो लाखों-लाख स्वयंसेवकों की आपका जन सौभाग्य नार दिनों के दि
गुलता है। यहाँ पर सभी स्वयंसेवकी अनुदिन दीवलीय स्वयंसेवक व अनुष्ठान
मनोवैज्ञानिक काम की प्राप्ति करते हैं। 2016 में यहाँ अंगारी धाम ट्रस्ट
स्थापना हुई है जिसके काम स्वरूप ट्रस्ट के प्रभाल के अधिकांशों की
कुल सुविधा में सभी बहोतरी हुई विवरण सकारने यहाँ लाने वाने
स्वयंसेवकों की 2018 में राजकीय मैला का दर्जा प्रदान की उल्लेख
करा वामके सामाजिक स्तर पर सभी बहोतरी मिला है।

प्रमोद कुमार

सचिव



अध्यक्ष
15/9/2025

Aungari Dham Trust
Nalanda

To
Nodal Officer
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India

Subject: Consent on nominating the Chhath Mahaparva (the grand celebration of the Chhath) to the Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

Madam/Sir,

The Chhath Mahaparv is celebrated in the Dwapar era's Aungari Dham since the time immortal. Lord Krishna's grandson established 12 peethas (the religious seats) across India and Aungari Dham is one of them. Apart from the celebration of the Kartik (winter) and Chaitra (spring) Chhath parvas, a weekly celebration is also held every Sunday. People realize their wishes and receive boons after having the holy bath (snana) in the sarovara (the pond) and offering religious devotion (pooja) and by offering donations to the poor. During the times of the Chhath, lakhs of devotees from across the country congregate here to worship of the Chhath Mata. The Chhath vrates (those who have taken a four day vows during the Chhath worship) observe all the religious rituals and receive blessings. Establishment of the Aungari Dham trust has paved the way for provision of a number of facilities to the devotees. The Bihar Government has accorded the Chhath Pooja Mela the status of the State Celebration, which has only boosted the acceptance of the Dham on a social level.

Signed by Rambhooshan Dayal
Chairman
Aungari Dham Trust
Nalanda

Letter of Consent

Nomination of Chhath Mahaparv for inclusion in the UNESCO Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity

Date: 11 September 2025

The Secretary
Sangeet Natak Akademi
35, Feroze Shah Road
Rabindra Bhavan
New Delhi – 110001

Subject: Consent for Nomination of Chhath Mahaparv

Dear Sir,

I, **Miss Ekisha Singh, Author, Cultural Researcher, and Visual Storyteller**, hereby extend my full consent and support for the nomination of *Chhath Mahaparv* to be included in UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

Chhath Mahaparv is one of the most profound cultural and spiritual traditions of India, deeply

rooted in reverence for the Sun God (*Surya*) and the natural elements. Beyond being a ritual of devotion, it embodies an ecological consciousness, intergenerational wisdom, and a collective spirit of discipline and harmony with nature—values that remain timeless and urgent in our contemporary world.

As an age-old living tradition, *Chhath Mahaparv* continues to evolve while safeguarding its essence of faith, resilience, and sustainability. Its widespread observance across communities and regions in India and abroad underscores its universality and cultural depth.

As a visual storyteller, I strive to illuminate and interpret living traditions like *Chhath Mahaparv*, transforming intangible heritage into narratives that foster empathy, cultural awareness, and a spirit of preservation. I am convinced that UNESCO's recognition of this festival will not only deepen global appreciation for India's rich cultural legacy but also inspire future generations to honour, celebrate, and carry forward this radiant tradition of "Sun worship".

I therefore wholeheartedly endorse this nomination.

With profound regards,
Yours Sincerely,

Storyteller

Ekisha Singh

Murti Makan Building, Maipura, GPO Patna,
Patna – 8000001

singheekisha@gmail.com +91 9974648127

Author of Chhath – Worshipping the Sun and
Nurturing Nature

Miss Ekisha Singh

Author | Cultural Researcher | Visual

Abhishek Kumar Senior Fellow (Ministry of Culture, Government of India) Tagore National Scholar (Indira Gandhi National Centre for the Arts, India)
International Ford Fellow (University of London, United Kingdom)
International Arts for Good Fellow, Disability Arts (SIF, Singapore)
Grantee (Sangeet Natak Akademi, India)
MA in Arts Administration; Cultural Policy; Philosophy, PhD in Education Policy
Lead, Teacher Education (Humana People to People India, India)
Work Areas: Education, Arts-integrated Pedagogy, Cultural Heritage & Theatre

Consent Letter L. No.: CL/2024-25/001; Date: 14 September 2025

To,
The Secretary
Sangeet Natak Akademi, Ministry of Culture, New Delhi

Subject: Regarding nominating 'Chhath Mahaparva' as a Multinational Nomination for inclusion in the UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity [Reference: F.No. ICH/UNESCO/2024- 2025/111/Email; 11 September 2025]

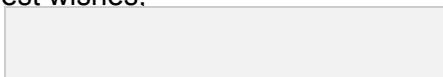
Sir/ Madam,

With immense pleasure, I would like to provide my consent for inclusion of 'Chhath Mahaparva' in the UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity.

The Great Festival of Chhath, a vibrant emblem of joy and unwavering faith, resonates across

numerous Indian states, and even extends its reach to distant shores. This celebration is a symbol of identity for agrarian cultures, deeply intertwined with the sentiments of roughly one-third of India's populace. At its heart, Chhath Mahaparva is a profound tribute to nature's harmony and a principle essential for the sustenance of human life. This is symbolically embodied in the veneration of the Sun God (Surya), the very source of life on Earth, and Chhathi Maiya, the revered goddess of creation. Devotees, both men and women, stand in the waters of rivers or ponds to present offerings of grains, milk, and fruits to the rising and setting sun, while simultaneously praying to Chhathi Maiya. This festival is a beautiful example of Loka-Veda, the unification of folk traditions and scholastic quests. While the folk faith in nature is evident in the worship of the Sun, it concurrently celebrates the mythological reverence for creation itself. Chhathi Maiya is not only a deity associated with childbirth and agricultural success but also a manifestation of the goddess Katyayani, the sixth form of Goddess Durga. The legends surrounding the festival's origins reveal its universal appeal, transcending social strata. Some tales narrate a poignant dialogue between a common farmer and the sun god, Dinkar, while others depict the gods fulfilling the wishes of kings and queens. Though celebrated in different months- Kartik (November), Chaitra (April) and at some places in the month of Bhadra (September), the primary rituals always commence on the sixth day (Shashthi) after the new moon, with preparations beginning long in advance. The Kartik Chhath, for instance, emerges from the festivities of Diwali. The festival is enriched by a vibrant tapestry of artistic and cultural practices. The air fills with beautiful songs, creating a divinely serene atmosphere. Local artisans craft intricate baskets and earthen pots to carry the sacred offerings, embodying a deep connection to the land. This festival, with its rigorous rituals and vibrant colors, stands as a fabulous example of intangible cultural heritage of humanity, a living, flawless tradition that resides eternally in the hearts of its people.

With best wishes,



Regards,
Abhishek Kumar



+91 9974648127

Author of Chhath – Worshipping the Sun and Nurturing Nature

16/2025 15-09-25+91-9905209313

To,

The Secretary,

Sangeet Natak Akademi,
35, Firoz Shah Road, Rabindra Bhavan, New Delhi – 110001

Subject: Consent for inclusion of Chhath Festival in the UNESCO Representative List of

the Intangible Cultural Heritage (ICH) of Humanity

Respected Sir/Madam,

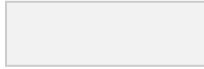
We, **Bhangima, Patna– a Maithili Theatre and Cultural Organization**, hereby express our full consent and support for the **nomination of Chhath Festival to the UNESCO Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity**.

Chhath Festival is celebrated with utmost devotion, faith, and community participation not only in the Mithila and Purvanchal regions but also across several states of India and among diaspora communities worldwide. **This festival, dedicated to Surya (the Sun God) and Nature Worship, embodies a living tradition of environmental harmony, gender equality in participation, community solidarity, and discipline in social life.**

Recognition of Chhath Festival as an Intangible Cultural Heritage will not only provide international acknowledgment to the traditions of Mithila and North India but will also inspire humanity at large to reconnect with Nature, Spirituality, and Sustainable Living.

Therefore, **Bhangima Natya Sanstha, Patna, whole heartedly gives its consent for the inclusion of Chhath Festival in the UNESCO ICH Representative List.**

Sincerely,



Surendra Acharya President

Bhangima, Patna

Email ID:- bhangima.patna@gmail.com

मो.: 9905209313, Regd Office:

L-2/33, P.I.T Colony, Kankarbagh, Patna, Bihar-800020

Website: www.bhangima.in Facebook page: <https://www.facebook.com/bhangima>



Purvodaya

(Regn. No.: S/RS/DW(SW)/391/2018)

Subject: Support for inclusion of *Chhath Mahaparv* in UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage (ICH).

Respected Sir,

Through this letter, we would like to inform you that *Purvodaya*, a socio-cultural organization registered under the Societies Registration Act, wholeheartedly welcomes and supports the efforts of the Ministry of Culture, Government of India, and the Sangeet Natak Akademi for the inclusion of *Chhath Mahaparv* in UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage.

Chhath Mahaparv is an ancient festival deeply rooted in the cultural, social, and spiritual traditions of India. It is celebrated with great devotion and discipline, reflecting values of purity, harmony, environmental awareness, and community solidarity. Generations of people have safeguarded and transmitted this tradition with immense dedication.

Our organization strongly supports the inclusion of *Chhath Mahaparv* in the UNESCO Representative List of Intangible Cultural Heritage, and we have no objection in this regard.

Sincerely,

Ajay Jha

President, Purvodaya

Vipin Garden, Uttam Nagar

New Delhi – 110059

Mobile: 7683010770

No. 25/2025

Date: 14 September 2025

To

The Secretary

Sangeet Natak Akademi

Rabindra Bhavan, Ferozeshah Road

New Delhi – 110001

Subject: Inclusion of Chhath Puja in UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage (ICH). **Respected Sir,**

We would like to submit that *Achhinjal* is a socio-cultural organization, registered under the Societies Registration Act. Our organization appreciates the efforts being made by the Ministry of Culture, Government of India, for the inclusion of Chhath Puja in UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage (ICH). We welcome the initiative of the Sangeet Natak Akademi in this regard.

Our organization supports the inclusion of Chhath Puja in UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage (ICH), and we have no objection to the same.

Yours sincerely,
Mukesh Kumar Jha
General Secretary

ACHHINJAL

A-515, Buddha Marg, Mandawali, Delhi – 110092
E-mail: achhinjal@gmail.com





Date: 15/09/2025

To,
Nodal Agency,
Intangible Cultural Heritage,
Ministry of Culture, Government of India.

Subject: Consent for nomination of Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity.

I, Vikram Kumar Thakur, resident of Mohan Bahiyaam, Sakri, Madhubani, Bihar, and a lifelong practitioner/promoter of Chhath Mahaparv, through this letter, provide my full consent and support for nominating Chhath Mahaparv to the Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity of UNESCO.

This festival is a symbol of our identity, social harmony, and environmental awareness. I wholeheartedly support its recognition at the international level and pledge to continue working to ensure it reaches future generations.

Sincerely,
(Signature)
Vikram Kumar Thakur

Contact:
Mohan Bahiyaam, Sakri, Madhubani, Bihar
(Mobile Number: 7061496104)



District Administration, Begusarai
(District Art and Culture Office, Begusarai)
Email: dacobegusarai@gmail.com
Address – First Floor, District Planning Office Building, Collectorate Campus, Begusarai

Letter No.: 263/

Date: 13/09/25

Sender:
Shyam Kumar Sahani
District Art and Culture Officer
Begusarai

To:
Nodal Office
Amrit Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India

Subject: Cooperation in nominating representatives for the UNESCO list of Chhath festival. Respected Sir/Madam,
It is to inform you that the Art, Culture, and Youth Department Office of Begusarai, which, along with the district of Begusarai in Bihar, is working for the preservation and conservation of the Amrit Cultural Heritage.
We seek your kind cooperation and support in nominating Mr. Shyam Kumar Sahani for the prestigious nomination.

As you are aware, Chhath festival is a major sun-worshipping festival observed with great devotion in several states of India including Bihar, Jharkhand, Eastern Uttar Pradesh, and the Terai region of Nepal, as well as in many countries across the world.
Since ancient times, this festival has been celebrated as a confluence of human society in various sectors. It is deeply rooted in nature-based environment conservation, social harmony, and communal unity.
Our department has played an active role in encouraging, promoting, and supporting activities related to Chhath Mahaparv. We continue to contribute to its conservation and sensitization. We affirm that this nomination represents the collective cooperation of all artists and cultural workers associated with this department.

Yours faithfully,
(Signature)
Shyam Kumar Sahani
Date: 13/09/2025
District Art and Culture Officer
Begusarai

Letter No – 401/2025 Date : 14- Sep 2025

Subject: Consent for Nomination of Chhath Mahaparva to the UNESCO Representative On behalf of Kulkul Jha Trust, which has been actively engaged in the safeguarding

and Mahaparva for inclusion in the UNESCO
Representative List of Intangible Cultural

To,

The Nodal Authority, ICH

For generations, Chhath Mahaparva has united
communities across Bihar, Uttar

Ministry of Culture

Government of India

List of Intangible Cultural Heritage of Humanity



Respected Sir/Madam,

promotion of intangible cultural heritage in the Mithila region and beyond, I am pleased to extend our full consent and wholehearted support to the nomination of Chhath

Heritage of Humanity.

Pradesh, Jharkhand, and several other regions of India. Its rituals and practices Bhawesh Kumar Jha embody reverence for natural elements, sustainability, inclusivity, and communal harmony—values that deeply resonate with the objectives of cultural preservation.

Kulkul Jha Trust

Our trust has been directly involved in documenting, promoting, and facilitating community-led practices related to Chhath Mahaparva. We remain fully committed to safeguarding its authenticity and ensuring the continuity of this living tradition for future generations.

We affirm that this nomination



reflects the aspirations and consent of practitioners, bearers, and supporting organizations. We also welcome the opportunity to contribute further to safeguarding measures and collaborative initiatives under the guidance of the Ministry of Culture.

Sincerely,

Secretary

+91-9560676743

HIT YT

zforo O : 3118

ZTfd: 2009

AISTfMo To - 21, 1860

fareroigi, grtoa, HTITGgZ-812001 (farsr), to :

9939442763 To,

The Secretary
Sangeet Natak Academy
Ministry of Culture, New Delhi

Sub: Letter of Consent for the Nomination of Chhath Puja for Possible
Inscription on the Representative List of Intangible Cultural Heritage of
Humanity, UNESCO

A task assigned by the Ministry of Culture, Government of India through the
implementing agency of the Sangeet Natak Academy New Delhi to prepare a

nomination dossier for the inclusion of Chhath Puja on the Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity, UNESCO.

We are highly delighted to learn about the nomination process of Chhath Puja for possible inscription in the Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity, UNESCO.

We strongly believe from our heart that Chhath Puja, since ancient times, has been one of the most important socio-cultural festivals of India. The festival reflects people's aspirations, deep reverence for nature, the Sun and water bodies, and promotes social harmony. Millions of devotees from all sections of society participate in this festival every year. We are quite hopeful that Chhath Puja's inscription in the list shall give the festival an international recognition and prestige that it truly deserves.

Name: ANIALI CG Hos

Gender: -fEMALE

Designation: - SECRETARY

Organization:

Address and Contact number: - NAND LAL NISHRA LANE, SURKHTKAL, TTLKAN
ANIHI SHAG ALPuR BIHAR 8 200 I

Association with the festival:

"Our organization has been associated with the celebration of Chhath Puja for the last 25 years. We have been actively involved in organizing and supporting the rituals, safety and cleanliness of river banks/ghats, cultural programmes and awareness campaigns about environmental aspects of Chhath Puja in our region. Devotees from various castes, creeds, and communities come together in our events, which highlights the festival's unique inclusive character."

Key Features of Chhath Puja:

- > Worship of the Sun God and Chhathi Maiya with deep reverence for nature and environmental conservation.
- > A four-day festival marked by fasting, purity, water conservation, devotional folk songs, and active community participation.
- > A celebration that transcends barriers of caste, class, gender, and religion, promoting social harmony and unity.

Years of association with the festival: 25 Years

We strongly feel that Chhath Puja needs international recognition by UNESCO.

We hope that Chhath Puja shall get its deserved place in near future.

(Signature)

Name

Designation

Date 15J09/20 25

















TO दिनांक 15.09.2025

THE SECRETARY,
SANGEET NATAK ACADEMY,
35, FERAZ SHAH ROAD, RAVINDRA BHAWAN,
NEW DELHI – 110001

SUB:- For nomination of 'Chhath Festival' for inclusion in the Representative List Of UNESCO's Inherited Cultural Heritage (ICH

DEAR SIR

Chhath is the great festival of Bihar. Not only Bihar but millions of people of the world are connected to it in religious, spiritual and emotional terms. The folk tradition of Chhath has been going on since Ancient times. It is a supernatural ritual of sun worship. Men and women perform it to achieve human desires. The materials used in Chhath Puja, fruits etc. are obtained from nature. In a way, it is a

festival of conservation of nature. Along with this, it also sends the message of cleanliness of sea,

River, pond and other water bodies, which is in favor of protecting the environment. Bihar Mahotsav Samiti has been performing folk cultural rituals with public cooperation since 2003 without any

government grant. In our presentations, the staging of Chhath festival is the center of attraction for

The people. Hundreds of artists participate in it with pure heart. Thousands of people of Bihar origin

Living in Delhi NCR participate in it with great enthusiasm. Our committee through the Government of India and Government of Bihar the demands from UNESCO, the guardian of the world's cultural

heritage, that the Chhath festival, a ritual of the people of Bihar, be included in the representative list of UNESCO's humanistic cultural heritage so that the whole world can be benefited.

On behalf of my organization, I give my full consent to this noble deed and also assure the desired cooperation.

THANKING YOU

RAKESH KUMAR VERMA PUBLIC RELATIONS OFFICER PHONE NO 9810407750





To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Madam/Sir,

I, **Sumit Kumar**, a resident of **Vishnupur Daiya, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Sumit Kumar
Village - Vishunupur Daiya
Begusarai



To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Madam/Sir,

I, **Arvind Das**, a resident of **Vishnupur Daiya, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,

Yours faithfully,

-sd

Arvind Das
Village - Vishunupur Daiya
Begusarai



To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO
Representative List.

Madam/Sir,

I, **Rajavalam Kumar**, a resident of **Sugharan, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Rajavalam Kumar
Village – Sugharan
Begusarai




To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO
Representative List.

Madam/Sir,

I, **Sandeep Kumar Ram**, a resident of **Ahiyapur, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Sandeep Kumar Ram
Village – Ahiyapur
Begusarai




To,

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO
Representative List.

Sir,

I, **Arjun Prasad Sahni**, a resident of **Sugharan, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,

Yours faithfully,
-sd
Arjun Prasad Sahni
Village – Sugharan
Begusarai




To,

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the
UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Aditya Kumar Ambar**, a resident of village **Rani 01, Bachhwara, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,

Yours faithfully,
-sd
Aditya Kumar Ambar
Village – Rani 01
Bachhwara
Begusarai



To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Vishwajit Kumar**, a resident of village **Ratanpur Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Vishwajit Kumar
Village – Ratanpur Begusarai




To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Subodh Kumar**, a resident of village **Pokharia, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,

Yours faithfully,
-sd
Subodh Kumar
Pokharia Begusarai



To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Ved Prakash**, a resident of village **Pokharia, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Ved Prakash
Pokharia Begusarai



Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India



New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Rambabu Singh**, a resident of village **Pahasara, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,
Yours faithfully,
-sd

Rambabu Singh
Pahasara Begusarai



To

Nodal Authority
Intangible Cultural Heritage
Ministry of Culture
Government of India
New Delhi.

Subject: Consent for the nomination of the Chhath Mahaparv festival to the UNESCO Representative List.

Sir,

I, **Nikhar Kumar**, a resident of village **Chhittaraaur, Begusarai**, and a lifelong practitioner/performer of the Chhath Mahaparv, hereby give my full consent through this letter for the nomination of the Chhath Mahaparv to UNESCO's Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

This festival is the foundation of our identity, social harmony, and environmental consciousness. I wholeheartedly support its international recognition and am committed to passing it on to future generations.

With regards,

Yours faithfully,
-sd
Nikhar Kumar
Chhittraur
Begusarai





The Hindi to English translation is given below:

Date: 14/09/2025

To,

Secretary

Sangeet Natak Akademi,

Ministry of Culture

New Delhi

Subject: Letter of Consent for multinational nomination of 'Chhath Mahaparva' in the Representative List of UNESCO's Intangible Cultural Heritage of Humanity

Respected Sir,

I, Bharat Singh "Bharati", express with all my heart that 'Chhath Mahaparva' is a very ancient, popular and vibrant cultural festival celebrated in various regions including the Indian subcontinent and Nepal. The social, spiritual and environmental significance of this Mahaparva is unlimited, and it is an invaluable part of the shared cultural heritage of humanity.

I support the proposal to include this great festival as a multinational nomination in the representative List of UNESCO's Intangible Cultural Heritage. I believe that this nomination will provide new recognition, protection and expansion to this heritage at the global level.

Therefore, I give my formal consent to this nomination process.

Regards,
(Signature)

Name: Bharat Singh "Bharti"

Designation: Awardee Artist, Akashvani and Doordarshan Patna (Top Grade)

Institution/Organization: Independent Folk Music Artist



The Hindi to English translation is given below

Letter No:... 48 Date :15/09/2025

To,
Nodal Authority,
Intangible Cultural Heritage,
Ministry of Culture,
Government of India.

Subject: Consent to nominate Chhath Mahaparva in the UNESCO representative

list. Sir/Madam,

We, Kalar Wheel Theatre Group, Darbhanga, working for the preservation and promotion of Intangible Cultural Heritage in Bihar, extend our consent and support for the nomination of Chhath Mahaparva.

For generations, Chhath has been binding communities together in Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand and other regions. Its rituals are a symbol of nature worship, environmental balance, inclusiveness and community unity. Our organization has played an active role in documenting, promoting and community cooperation in activities related to Chhath festival and will continue to contribute to its preservation in future as well.

We affirm that this nomination represents the collective consensus of seekers, communities, and institutions. Sincerely,

SHYAM KUMAR SAHNI

Shyam Kumar Sahni Secretary/Director Color Wheel Theatre Group, Darbhanga, Bihar



The Hindi to English translation is given below

To,
Nodal Authority, Intangible Cultural Heritage,
Ministry of Culture, Government of India.

Subject: Regarding consent and support for nomination of Chhath Mahaparva in UNESCO's
Representative Intangible Cultural Heritage List of Humanity.

Sir,

Bhikhari Thakur Rangmandal Training and Research Centre is engaged in the preservation and promotion

of various and diverse intangible cultural heritages of Bihar and Uttar Pradesh. The great festival of Chhath is an important part of our folk culture. For generations, Chhath has been binding communities together in Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand and other regions. Its rituals are a symbol of nature worship, environmental balance, inclusiveness and community unity. It includes collective knowledge, oral traditions, folk songs, rituals and practices related to the worship of the Sun and Chhathi Maiya. Our community has been active in promoting and preserving this festival for generations and is committed to passing it on to future generations.

During the great festival of Chhath, our organization has been organizing Chhath songs, Chhath stories, dance in Chhath Puja etc. for the last fifteen years. Our organization has played an active role in the documentation, promotion and community cooperation of activities related to Chhath festival and will continue to contribute to its preservation in the future as well.

Therefore, we give our full consent for the nomination of Chhath Mahaparva in UNESCO's list of representative intangible cultural heritage of humanity and also assure that we will continue to play an active role in its preservation and promotion in future as well.

Regards

Division of confidence

Dr. Jainendra Dost

Founding Director

Bhikhari Thakur Theatre Training and Research Center, Chhapra

Mob: 9560695145, Email: dostjai@gmail.com



The Hindi to English translation is given below